

दमकत दामिनि ( १८६ )

देखो छाई है बहारी झूलनि की।  
छिटक रही छबि फूलनि की॥

सावन सुहावन तीज हरयाली  
महक रही है वृक्षों की डाली  
मधुर मधुर रट विहंगनि की॥

उमड़ि घुमड़ि घन घिर आए है  
गरज गरज के हिंय हुलसाए है  
बीच बीच दमकनि दामिनि की॥

दादुर मोर पपीहा काननि में अमृत रस घोले  
गावत महिमा बृज बन की॥

प्रमोद बन में प्रेम हिण्डोरा  
झूलत साई संग युगल किशोरा  
मौज भई झुक झूमनि की॥

प्रेम का झूटा पल पल आवे रसिक युगल मन मौद  
बढ़ावे  
ललक लतनि पग चूमन की॥

साईं झूले युगल झुलावे निरखि निरखि मैया हींय सरसावे  
आरती उतारे निज प्राणनि की॥

जब साईं को निज सुधि आई प्रेम मगन भए मन सकुचाई  
प्यारी है छबि नेह संवरनि की॥

सीय रघुवर साईं प्रेम में झूलें शील स्नेह लखि मन मन फूलें  
आश पूरण मैगसि मन की॥